

## ऐसो कौ उदार जग माहीं

ऐसो कौ उदार जग माहीं ।

बिनु सेवा जो द्रवे दीन पर, राम सरस कोउ नाहि ॥

जो गति जोग बिराग जतन करि नहिं पावत मुनि ज्ञानी ।

सो गति देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी ॥

जो संपति दस सीस अरप करि रावण सिव पहाँ लीन्हीं ।

सो संपदा विभीषण कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्हीं ॥

तुलसीदास सब भांति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो ।

तो भजु राम काम सब पूरन करहि कृपानिधि तेरो ॥

स्वर : [पुरषोत्तम दास जलोटा](#)

<https://visualasterisk.com/bhajan/lyrics/id/1005/title/aiso-ko-udaar-jag-mahi-binu-seva-jo-drave-deen-par-ram-saras-kou-nahi>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |